सनातन धर्म स्थल (सिटी)

निर्माण के लिए एक प्रस्तुति

संकल्पना

सुदेश अग्रवाल और उनकी टीम की

Updated on 03 - 02 - 2023

सनातन धर्म स्थल (सिटी)

सनातन धर्म के पुनरुत्थान में एक कदम

(मानवता और आने वाली पीढ़ियों को समर्पित)

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

सनातन धर्म स्थल प्रस्तुति

विषय-सूची

1. पृष्ठभूमि और ऐतिहासिक तथ्य
2. स्थल में केंद्रीय गृह का प्रारूप
3. स्थल की विशेषताएं
4. स्थल में क्या क्या होगा
5. स्थल के उद्देश्य
6. स्थल के प्रबंधन का प्रारूप
7. वित्तीय प्रबंधन
8. समाज को मिलने वाले फायदे
9. राज्य सरकार के फायदे
10. केंद्रीय सरकार के फायदे
11. परियोजना का समय क्रम
12. निष्कर्ष

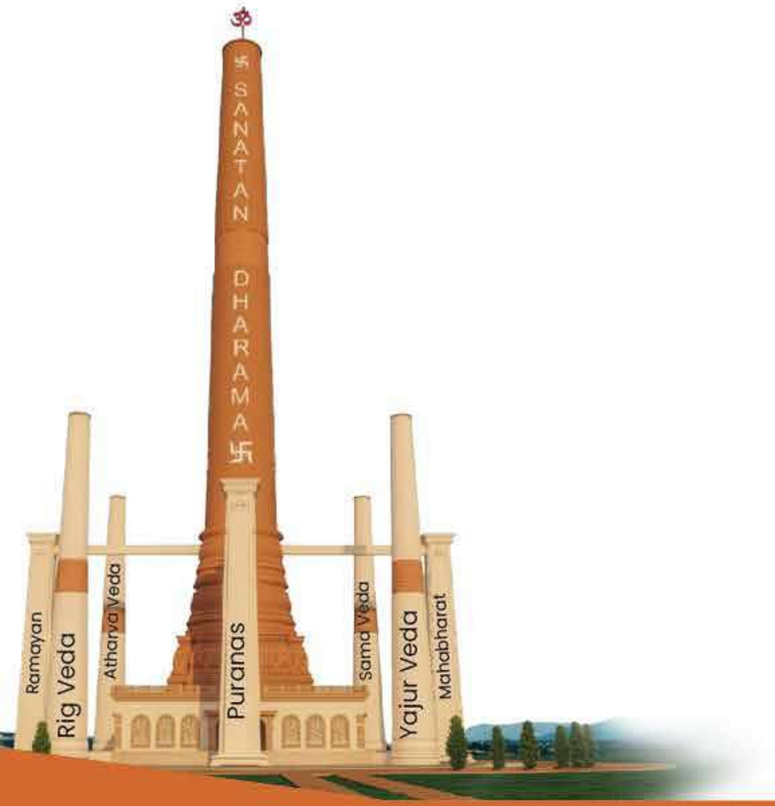

सनातन धर्म स्थल

पृष्ठभूमि

यह सर्वत्र रूप से मान्य है कि सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) दुनिया की सबसे पुरानी आस्था वाली पद्धति है। सनातन धर्म के शास्त्र "वेद" सबसे पुराने लिखित ग्रन्थ हैं। सभी जाने अनजाने में वेदों के हिसाब से जीवन व्यतीत करते थे और इस ब्रह्मांड को बनाने वाली अलौकिक शक्ति के अस्तित्व में विश्वास रखते थे।

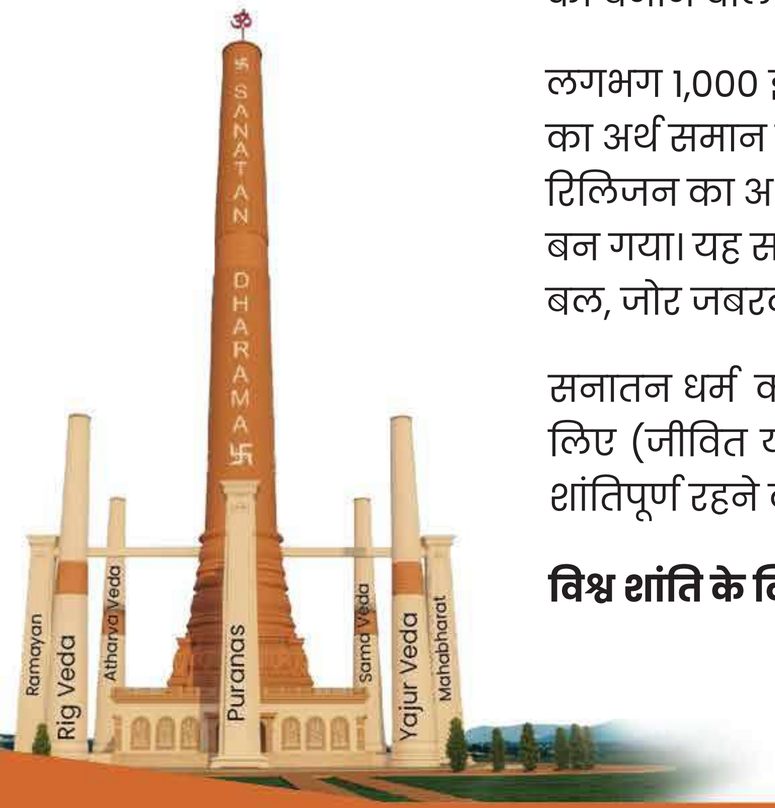

लगभग 1,000 ईसा पूर्व विभिन्न पंथों (रिलिजन) का आगमन शुरू हुआ। ये समझना जरूरी है कि रिलिजन (पंथ) और धर्म का अर्थ समान नहीं है (चार्ट को देखें)। उस समय में सनातन धर्म को भी पंथ बनाने के लिए "हिन्दू" का नया शब्द आया और रिलिजन का अर्थ धर्म बना दिया गया। इससे हिन्दू धर्म भी दूसरे पंथों की कतार में आ गया और सनातन धर्म हिन्दू रिलिजन बन गया। यह सनातन धर्म के मूल्यों को पीछे धकेलने और नए पंथों का विस्तार करने के लिए किया गया।विस्तार के लिए बल, जोर जबरदस्ती, प्रलोभन आदि सभी किस्म के तरिके अपनाये गए।

सनातन धर्म का अर्थ है, शाश्वत मूल्य, कर्तव्य और जिम्मेदारियां और यह अलौकिक शक्ति ने ब्रह्मांड बनाते समय सभी के लिए (जीवित या निर्जीव) निर्धारित कर दी थी। 3,000 वर्षों से हिंसा को झेलने के पश्चात अब मानवता में, सभी के साथ शांतिपूर्ण रहने का अहसास पैदा हो रहा है।

विश्व शांति के लिए सनातन धर्म आगे बढ़ने का रास्ता है। सनातन धर्म का पुनरुत्थान इस दिशा में एक कदम है।

अधिक जानें....

सनातन धर्म स्थल

ऐतिहासिक तथ्य

सनातन शास्त्र श्रीमद भागवत गीता में लिखा है "वसुधैव कुटुम्बकम" मतलब "विश्व एक परिवार है"

3,000 वर्षों से अन्य पंथों (रिलिजंज) का सनातन धर्म के अनुयायियों पर, धर्म परिवर्तन कराने और सनातन धर्म को ही खत्म करने का प्रयास जारी है। इस कारण सनातन धर्म के ज़्यदातर अनुयायी भारत की सीमाओं तक ही सिमट कर रह गए।

यह सब कुछ होने के बावजूद भी भारत ने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया और न ही अन्य पंथों के अनुयायियों की किसी भी तरीके से धर्म परिवर्तन कराने की कोशिश की। **अधिक जानें....**

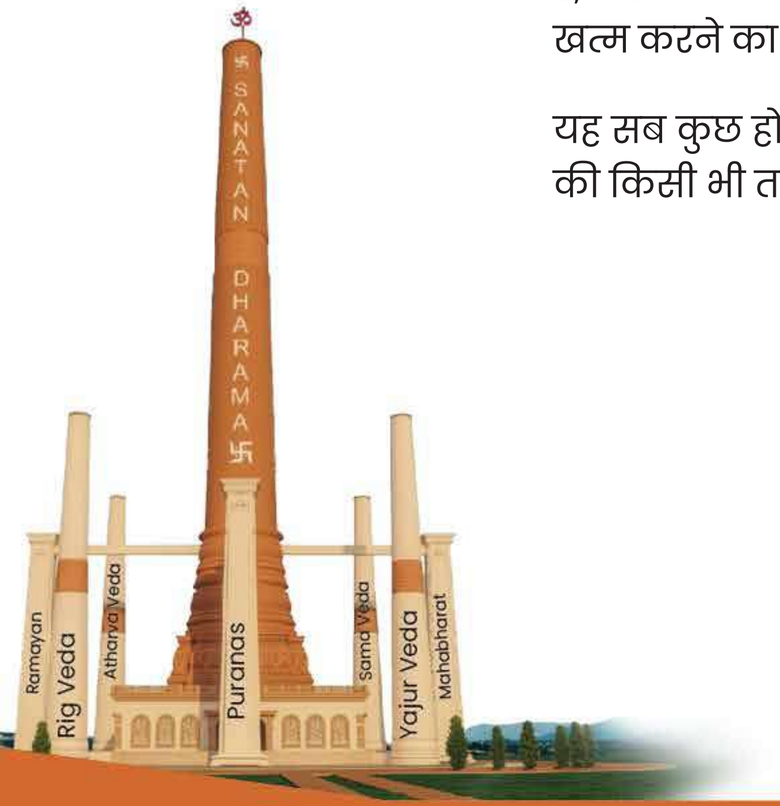

स्थल में केंद्रीय गृह का प्रारूप

सनातन धर्म स्थल

SANATAN DHARMA HOLY CITY

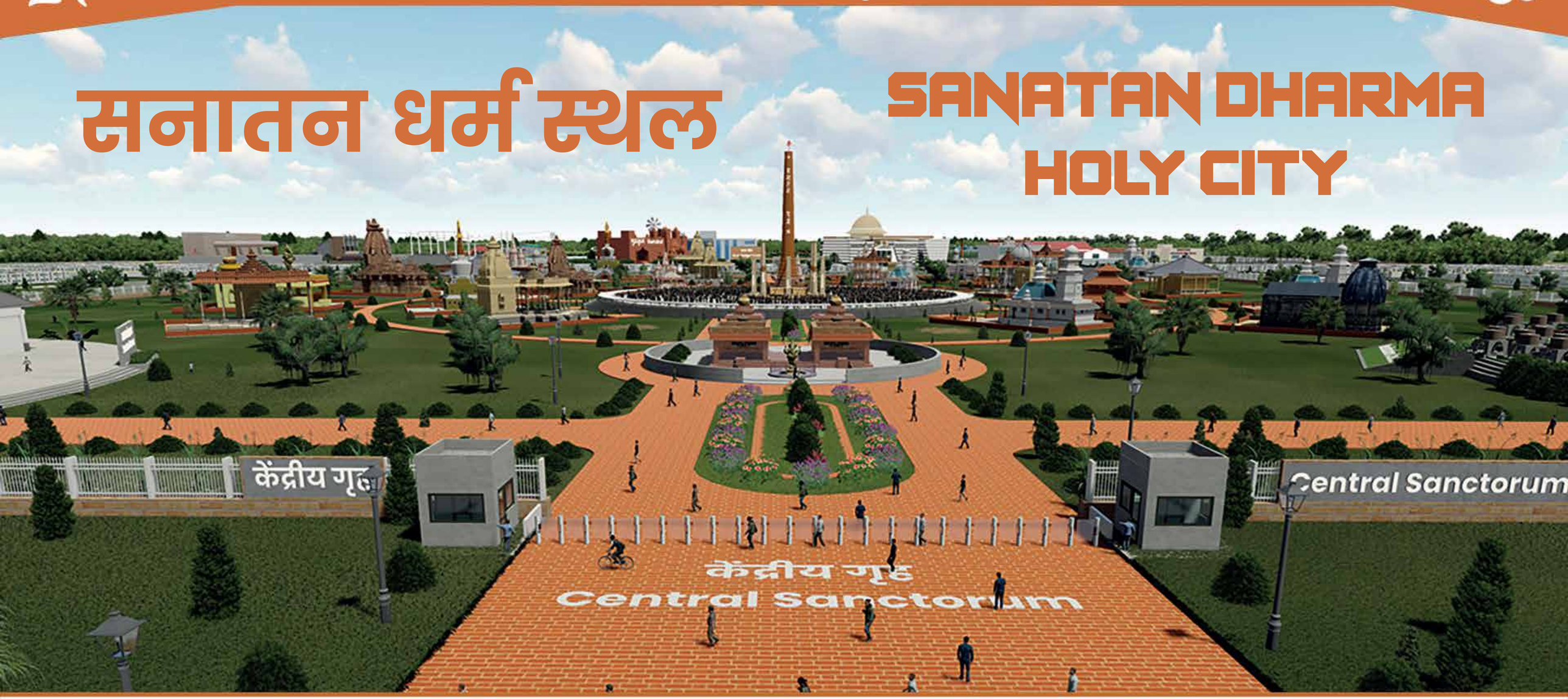

द्वारा परियोजना: **सनातन धर्म प्रतिष्ठान®**

(एक सार्वजनिक धार्मिक व धर्मार्थ ट्रस्ट)

सनातन धर्म स्थल
विशेषताएं 1/2

सनातन धर्म: स्थल एक धार्मिक व पवित्र शहर के रूप में विकसित होगा और इसकी विशेषताओं का प्रारूप निम्न है:

भौतिक विशेषताएं

महाराष्ट्र , उत्तर प्रदेश

शहर का क्षेत्रफल: लगभग 40 वर्ग किलोमीटर
(जमीन की आवश्यकता 8,000 से 10,000 एकड़)

मुख्य नदी के तट पर या नजदीक

सड़क, रेल, हवाई अड्डे के आस पास

सनातन धर्म स्थल
विशेषताएं 2/2

सुंदर, शुद्ध व शांत वातावरण में पूजा और प्रार्थना का स्थान

पूर्णतः शाकाहारी

आत्मनिर्भर

हरित, स्वच्छ व शुद्ध वातावरण वाला शहर

कुशल प्रबंधन

आसानी से पहुंचने की सुगम उपलब्धता

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

सनातन धर्म स्थल

स्थल में क्या क्या होगा 1/3

1,000 एकड़ में स्थल का केंद्रीय गृह होगा और इसमें होंगे:

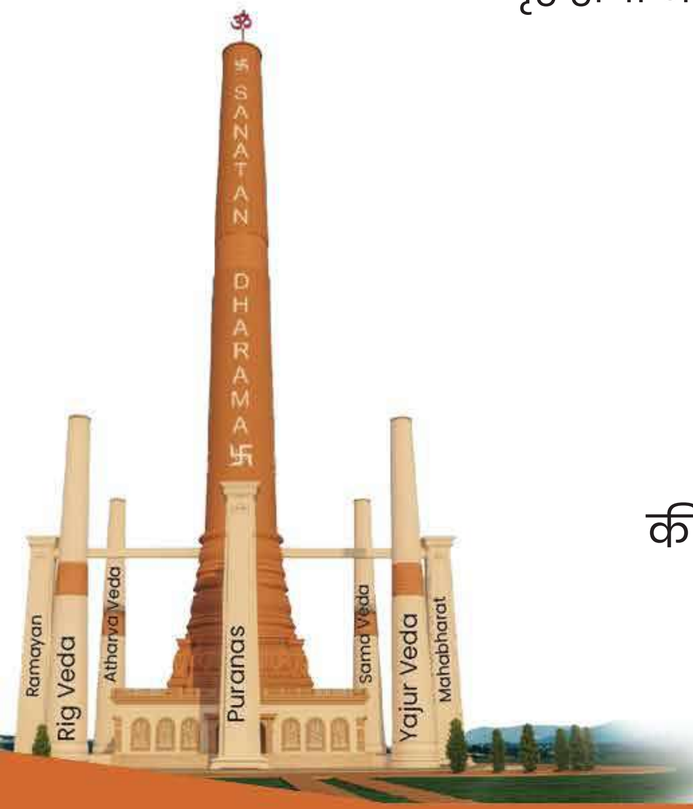

केंद्रीय स्तम्भ
400 फुट ऊंचा

संग्रहालय

सनातन धर्म:
की क्रमागत उन्नति के दृश्य

हिन्दू
मंदिर

अन्य पंथों के
पूजा के स्थान

विदेशों में
हिन्दू मंदिर

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

सनातन धर्म स्थल

स्थल में क्या क्या होगा 2/3

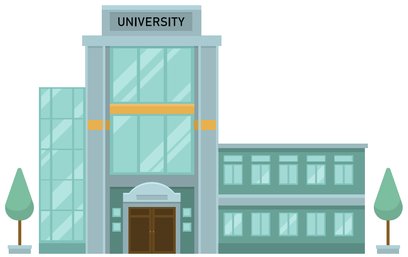

विश्वविद्यालय - सनातन धर्म:
और अन्य पंथों के अध्ययन के लिए

भारतीय संस्कृति, परंपराओं, त्यौहार, रीती-रिवाज,
संगीत और नृत्य के अध्ययन का संस्थान

गुरुकुल

मनुष्य की तन, मन, आत्मा को स्वस्थ
रखने के केंद्र (वैलनेस सेंटर्ज)

योग केंद्र

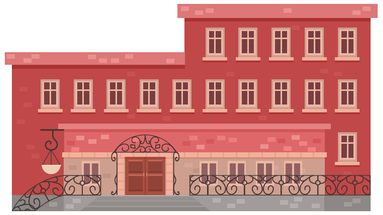

तीर्थयात्रियों के लिए आवास

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

सनातन धर्म स्थल

स्थल में क्या क्या होगा 3/3

स्थल में काम करने वालों
के लिए आवास

वरिष्ठ नागरिकों के निर्वाह
का इंतज़ाम

सम्मेलन केंद्र
क्षमता **3000** लोग

स्नान घाट
सभी सुविधाओं के साथ। पुरुषों और
महिलाओं के लिए अलग अलग

प्रशासनिक भवन
मीडिया सुविधाओं के साथ

सभी मूलभूत सुविधाएं

सड़क, बिजली, पानी, जल निकासी,
कूड़ा निपटान, मनोरंजन,
दुकानें इत्यादि

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

सनातन धर्म स्थल
उद्देश्य

- सनातन धर्म का पुनरुत्थान करना
- सनातन धर्म की जानकारी का प्रसार करना
- सभी हिंदुओं को एकजुट करना
- तीर्थ यात्रा का पवित्र स्थान बनना
- हिन्दू परंपराओं, त्यौहार, रीती-रिवाज, पूजा और प्रार्थना पद्धतियों को कारगर बनाना
- सनातन धर्म का केंद्रीय मार्गदर्शक प्राधिकरण बनना
- मिलजुल कर शांतिपूर्वक रहने का संदेश देना
- सनातन धर्म और अन्य पंथों के साथ सम्मेलन करना
- "विश्व एक परिवार है" इस सनातन संदेश का प्रचार करना

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

सनातन धर्म स्थल

प्रबंधन ढांचा 1/2

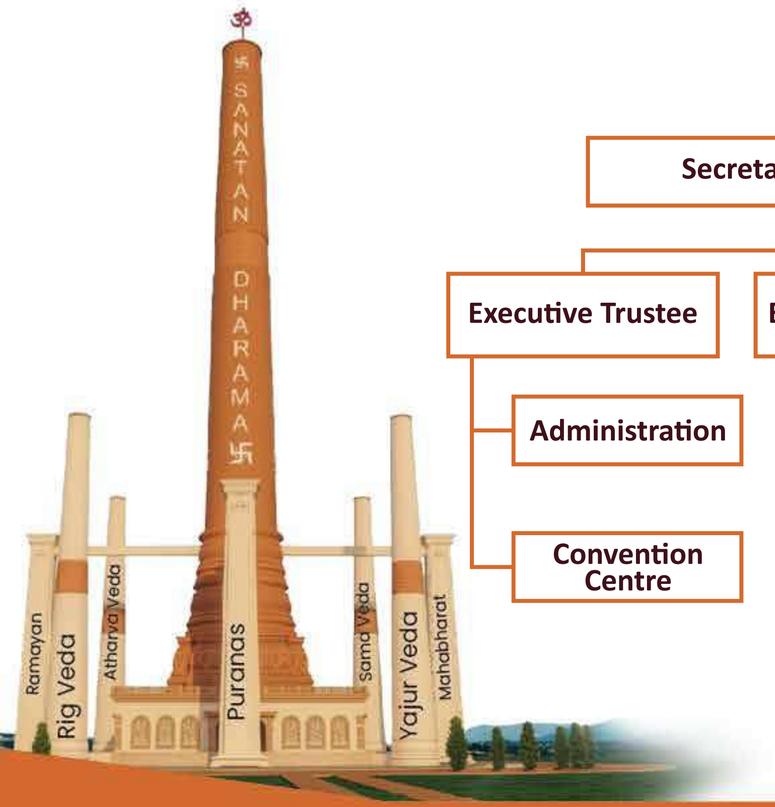

- Board of Trustees
  - Secretariat
  - Managing Trustee
    - Secretariat
    - Executive Trustee
      - Administration
      - Convention Centre
    - Executive Trustee
      - Services
      - Finance
    - Executive Trustee
      - Utilities
      - PR Associates & Supporters
    - General Secretary Trustee
      - Media
      - Promotion & Marketing
      - PR General
      - PR Govt. Bodies
  - Head of Knowledge, Spirtual & Religious Affairs
    - Structure to be planned

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

सनातन धर्म स्थल

प्रबंधन ढांचा 2/2

- Administration
  - Bye-Laws
  - Sactum Sanctorum
  - Waste Management
  - Landscaping Pilgrims
  - Accomodation Staff
  - Accommodation
  - Senior Citizens Living
  - Environment Food Control
  - Organic Farming
  - Shop & restaurants
  - Play & Entertainment
- Services
  - Wellness Centers
  - Yoga Centers
  - Meditation
  - Ghat
- Utilities
  - Power
  - Water
  - Sewerage
  - Drainage
- Knowledge
  - University
  - Academy
  - Gurukul
  - Scholars
  - Literature Production
- Convention Center
- Finance
  - Donations
  - Banks
  - Accounting
  - Audit
  - Funds Raising
- Promotion & Marketing
- Media
- PR General
- PR Govt. Bodies

सनातन धर्म स्थल
वित्तीय प्रबंधन 1/2

निधि की आवश्यकता निम्न के लिए है:

- जमीन
- परियोजना का निर्माण
- रोजमर्रा के खर्चे

इससे पहले हम विस्तार से चर्चा करें की निधि का इंतज़ाम कैसे होगा, आओ जाने कि स्थल में निधि आने के जरिए क्या होंगे।

- प्रबंधन शुल्क
- दान दक्षिणा
- ऑनलाइन चंदा / दान
- वस्तुओं और किताबों की बिक्री
- पट्टे पर दी गई जमीन का किराया
- स्थल में दूसरी संस्थाओं की आय में हिस्सेदारी
- अन्य आमदनी

सनातन धर्म स्थल
वित्तीय प्रबंधन 2/2

सनातन धर्म धार्मिक स्थल का निर्माण पूरा होने के पश्चात, स्थल में पूरे भारत और विश्व से तीर्थयात्री आएंगे। दूसरे मंदिरों में आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या को ध्यान में रखते हुए (तिरुपति बालाजी - 4 करोड़, स्वर्ण मंदिर - 3 करोड़, वैष्णो देवी - 3 करोड़, साई बाबा मंदिर - 2.5 करोड़) , यह अनुमान है कि सनातन धर्म स्थल में आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या बढ़ते बढ़ते 5 करोड़ प्रति वर्ष तक पहुंच जाएगी।

स्थल के संचालन से उत्पन्न होने वाली निधि इतनी बड़ी होगी कि उससे रोजमर्रा के खर्चे तो पूरे होंगे ही, साथ ही साथ ऋण (अगर निर्माण चरण में लिया) का भुगतान भी हो सकेगा। स्थल अपनी आय से दूसरे संस्थानों, जिनके उद्देश्य स्थल जैसे हों, की मदद भी कर सकेगा।

अभी हम नहीं जानते कि सनातन धर्म स्थल के निर्माण में कितनी राशि की आवश्यकता होगी। यह अनुमान है की कम से कम 20,000 करोड़ रुपए (300 करोड़ अमेरिकी डॉलर) तो लगेंगे। राशि को दान, योगदान, दक्षिणा, ऋण, शेयर पूंजी, ऋण पत्र (डिबेंचर) इत्यादि माध्यमों से जुटाया जाएगा। राशि पोषण के सभी रास्ते तलाशे जाएंगे। हमें राशि जुटाने में कोई समस्या नहीं दिखती।

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

सनातन धर्म स्थल

समाज को मिलने वाले फायदे

सनातन धर्म के पुनरुत्थान से भारत के अंदर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ेगा और इसका असर विश्व में भी दिखेगा चाहे देश किसी भी पंथ का अनुसरण करते हों।

समाज को निम्न तरीकों से फायदे मिलेंगे:

शांतिपूर्वक मिलजुल कर रहना

सामाजिक सामंजस्य

समानता

सबका समावेश

सहनशीलता और सीमित हिंसा

अधिक आर्थिक समृद्धि और विकास

कम अपराध

ज्यादा खुशहाली

बेहतर स्वास्थ्य और बहुत कुछ

सनातन धर्म स्थल

राज्य सरकार के फायदे

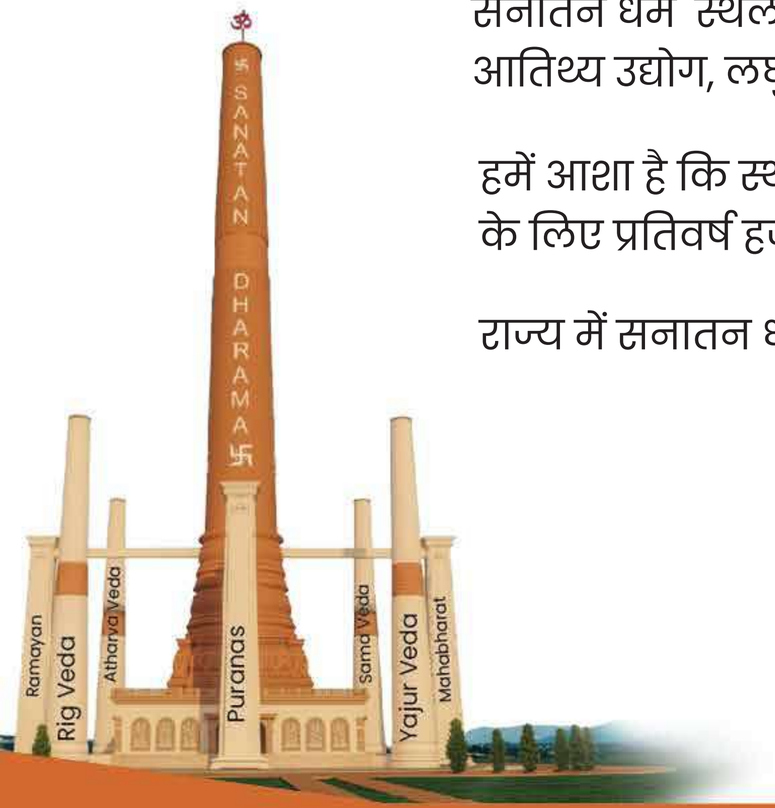

सनातन धर्म स्थल राज्य के विकास वातावरण में सहयोग करेगा और क्षेत्र के विकास की धुरी बनेगा। स्थल - पर्यटन, आतिथ्य उद्योग, लघु उद्योग, कला, साहित्य इत्यादि को बढ़ावा देगा और रोजगार भी पैदा करेगा।

हमें आशा है कि स्थल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में 2 लाख से ज्यादा लोगों के लिए रोजगार पैदा करेगा। स्थल राज्य सरकार के लिए प्रतिवर्ष हजारों करोड़ रुपए का राजस्व सृजन करेगा।

राज्य में सनातन धर्म स्थल से राज्य के मान सम्मान को बढ़ावा मिलेगा और राज्य में चौतरफा विकास होगा।

सनातन धर्म स्थल
केंद्रीय सरकार के फायदे

भारत एक शांतिप्रिय देश है और सनातन धर्म की "अलौकिक शक्ति" में आस्था और "विश्व एक परिवार है" में विश्वास के कारण भारत ने सभी पंथों (रिलिजन) को मिलजुल कर रहने की जगह दी। स्थल भारत की आस्था पद्धति को पूर्ण रूप से दिखायेगा और विश्व में भारत की छवि को बढ़ावा देगा। सही मायने में भारत एक बार फिर **"जगत गुरू"** बनने की राह पर आगे बढ़ेगा।

स्थल सनातन धर्म और हिन्दू संस्कृति, परम्पराओं, त्यौहार, रीति-रिवाज इत्यादि के बारे में जानकारी देने का केंद्रबिंदु बनेगा। इससे शांति और मेलमिलाप बढ़ेगा जिस का नतीजा लोगों का विकास और खुशहाली में बढ़ोतरी होगी।

स्थल उन लोगों पर अंकुश लगाएगा (भयभीत करेगा) जो भारत की शांतिपूर्वक और मिलजुल कर रहने की प्रणाली को भंग करने की कोशिश करेंगे। भारत श्रीमद भागवत गीता में लिखे श्लोक **"अहिंसा परमो धर्म; धर्म हिंसा तदैव च"** में विश्वास रखता है। इसका मतलब **"अहिंसा सबसे बड़ा नैतिक कर्तव्य है परन्तु कर्तव्यों के निर्वहन या संरक्षण में की गई हिंसा उससे भी बड़ा सदाचार है।"**

स्थल दिखायेगा की भारत एक शांतिपूर्वक और मिलजुल कर रहने का देश है।

परियोजना का समय क्रम

क्रम संख्या	विवरण	दिसंबर 2022 तक	दिसंबर 2023 तक	2024	2025	2026	2027	2028	2029	2030	2031	2032
1	परियोजना का अंतिम प्रारूप											
2	प्रस्तुति तैयार करना											
3	ट्रस्ट पंजीकृत करना											
4	टीम का गठन करना											
5	समर्थन प्राप्त करना											
6	राज्य और केंद्र सरकार से वार्तालाप											
7	परियोजना के लिए जगह चिन्हित करना											
8	राज्य सरकार के साथ एग्रीमेंट साइन करना											
9	राशि उपलब्ध करना											
10	जमीन उपलब्ध करना											
11	डिज़ाइन को अंतिम रूप देना											
12	बुनियादी ढांचे का निर्माण शुरू करना											
13	परियोजना का निर्माण											

DONE IN PROGRESS YET TO START

सनातन धर्म स्थल

निष्कर्ष

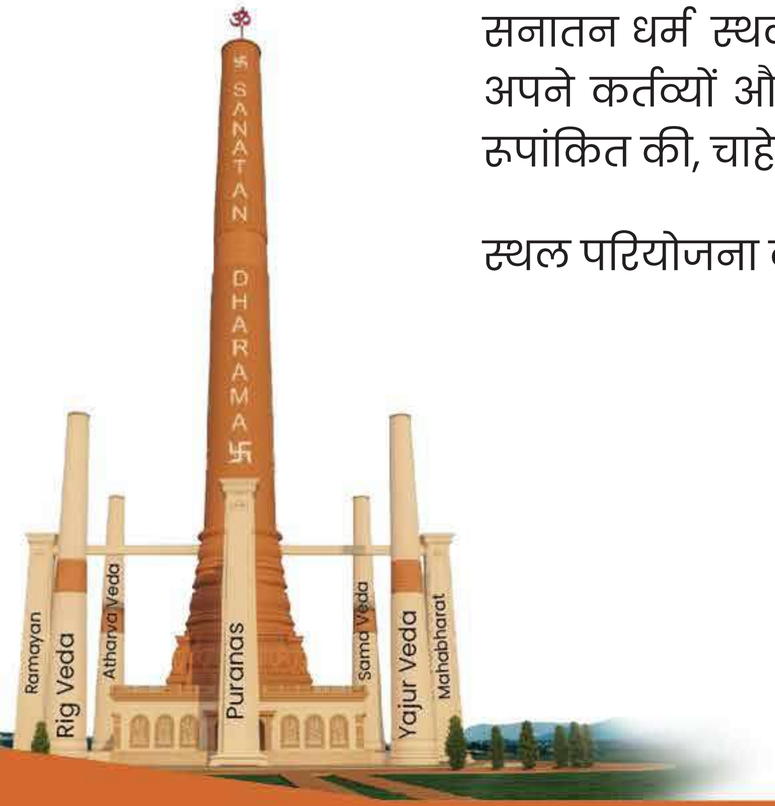

सनातन धर्म स्थल अपने आप में एक अनूठी परियोजना है जो आज तक कभी नहीं बनी। स्थल ये दर्शाएगा की मानव को अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का निर्वाहन उस हिसाब से करना चाहिए जो अलौकिक शक्ति ने ब्रह्मांड बनाते समय रूपांकित की, चाहे वो किसी भी पंथ का अनुसरण करते हों। ऐसा करने से मानवता को अतुल्य फायदे होंगे।

स्थल परियोजना का निर्माण लोगों के समर्थन / भागीदारी और सरकार के सहयोग से ही पूरा किया जा सकता है।

सनातन धर्म स्थल

पृष्ठभूमि

यह सर्वत्र रूप से मान्य है की सनातन धर्म विश्व की सबसे पुरानी आस्था पद्दित है। यह समझना जरूरी है कि "धर्म" और अंग्रेजी शब्द "रिलिजन" एक समान नहीं हैं। चार्ट से अंतर जानिए।... सनातन धर्म शास्त्र "वेद" विश्व के सबसे पुराने लिखित ग्रन्थ हैं। यह विवाद का विषय है कि यह कितने पुराने हैं। आज के इतिहासकार इन्हें कम से कम लगभग 7,500 ईसा पूर्व वर्ष के मानते हैं। लेकिन कई तरिके से किया गया शोध यह दर्शाता है कि ये 10,000 ईसा पूर्व वर्ष से भी ज्यादा पुराने हैं। उस समय जाने अनजाने में सभी वेदों के हिसाब से जीवनयापन करते थे और अलौलिक शक्ति, जिसने यह ब्रह्माण्ड बनाया, में विश्वास रखते थे जिसका कोई आकार नहीं, सबसे ज्यादा ताकतवर, सभी जगह मौजूद और सर्व ज्ञानी है।

लगभग 1,000 ईसा पूर्व वर्ष से अन्य पंथों / सम्प्रदायों यानि यहूदी, पारसी, जैन, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, सिख, आर्य समाज, स्वामीनारायण, साई बाबा इत्यादि, का उभरना शुरू हुआ और इन्होंने जोर जबरदस्ती, प्रलोभन देकर, डरा धमका कर पंथों का विस्तार किया और सनातन धर्म को पीछे धकेल दिया।

सनातन धर्म शाश्वत मूल्य, कर्तव्य व जिम्मेदारियों को दर्शाता है जो ब्रह्माण्ड के निर्माता ने सभी (जीवित या निर्जीव) के लिए निर्धारित की हैं। अलौकिक शक्ति के लिए (चाहे वो किसी भी नाम से पुकारा गया, भगवान, गॉड, अल्लाह इत्यादि) समग्र विश्व एक परिवार है। 3,000 से चल रही हिंसा ने एहसास दिला दिया की मानव को मिलजुल कर रहना चाहिए।

सनातन धर्म विश्व शांति के लिए आगे बढ़ने का रास्ता है। सनातन धर्म का पुनरुत्थान उसी दिशा में एक कदम है।

हम सनातन धर्म का ज्ञान और उसके मूल्यों का प्रचार प्रसार करेंगे।

Back

सनातन धर्म प्रतिष्ठान द्वारा एक परियोजना

रिलिजन और धर्म में अंतर

Chart 3/3

क्रम संख्या	पंथ (रिलिजन)	धर्म
1	रिलिजन एक समुदाय की आस्था पद्धति है	धर्म सर्वत्र है और पूरी मानवता के लिए है
2	रिलिजन आस्था और पूजा की खास प्रणाली है और उसमें विश्वास करने वालों को उसी रास्ते पर चलना है।	धर्म सब के लिए है। धर्म सर्वत्र शाश्वत मूल्य, कर्तव्य और जिम्मेदारियों का रास्ता है और सभी (जीवित या निर्जीव) को उन पर चलना है।
3	रिलिजन आस्था के विचार को बताता है और विचार बदल भी सकता है।	धर्म शाश्वत हैं और बदलते नहीं हैं।
4	रिलिजन अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं अनुसार बदला जा सकता है।	धर्म बदले नहीं जा सकते।
5	रिलिजन का संस्थापक होता है।	धर्म शाश्वत है और कोई संस्थापक नहीं।
6	रिलिजन के आरंभ होने की तिथि होती है।	धर्म शाश्वत है और आरंभ होने की कोई तिथि नहीं।
7	रिलिजन लोगों पर निर्भर करता है।	धर्म लोगों पर निर्भर नहीं करता बल्कि लोग धर्म पर निर्भर करते हैं।
8	रिलिजन का प्रचार प्रसार किया जाता है।	धर्म के साथ या तो हम पैदा होते हैं या उन्हें सीखते हैं। अलौकिक शक्ति ने धर्म को सभी (जीवित या निर्जीव) के अंदर निर्वाहित किया हुआ है।
9	रिलिजन का संस्कृत भाषा में अनुवाद "पंथ" है।	धर्म का पश्चिमी भाषाओं में कोई समान अनुवाद नहीं है

रिलिजन और धर्म में और बहुत से अंतर हो सकते हैं लेकिन यहां पर सिर्फ रिलिजन और धर्म में अंतर दर्शाने का उद्देश्य है।

Back

सनातन धर्म स्थल

ऐतिहासिक तथ्य

1,000 ईसा पूर्व वर्ष से पंथों और सम्प्रदायों, यहूदी, जैन, बौद्ध, ईसाई, इस्लाम, सिख, स्वामीनारायण, आर्य समाज, साई बाबा इत्यादि, के उभरने की शुरुआत हुई जिसने सनातन धर्म को पीछे धकेल दिया और नए पंथों का विस्तार करने के लिए बल, जोर जबरदस्ती, प्रलोभन आदि सभी किस्म के तरिके अपनाये गए।

सनातन शास्त्र महा उपनिषद दर्शाता है "वसुधैव कुटुम्बकम" अर्थात विश्व एक परिवार है।इस विचारधारा ने सनातन धर्म के अनुयायियों को धर्म परिवर्तन, आक्रमण, युद्ध, हिंसा, लालच, जबरदस्ती जैसे तरीकों से सनातन धर्म का विस्तार करने से प्रतिबंधित किया। इसके विरुद्ध अन्य पंथों व सम्प्रदायों का सनातन धर्म पर हमला 3,000 वर्षों से चल रहा है। इसी कारण से सनातन धर्म के ज्यादातर अनुयायी भारत की सीमाओं तक ही सिमट कर रह गए।

यह सब कुछ होने के बावजूद भी भारत ने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया और ना ही अन्य पंथों के अनुयायियों को किसी भी तरीके से धर्म परिवर्तन करने की कोशिश की।

सनातन धर्म के अनुयायी मायने हिन्दू शांतिपूर्वक रहने में विश्वास रखते हैं और उन्होंने विश्व को दिखा दिया की वह अन्य पंथों व सम्प्रदायों के अनुयायियों के साथ मिलजुल कर शांतिपूर्वक रहने को तैयार हैं। हिन्दू विश्व के सबसे ज्यादा सहनशील लोग हैं और इसीलिए आजकल भारतीयों का सम्मान विश्व में सब जगह होता है।

हाल ही में हिन्दुओं ने आक्रामक रुख लिया है और यह भद्दा रूप भी ले सकता है यदि अन्य पंथों व सम्प्रदायों के अनुयायी सनातन धर्म के अनुयायियों को मान्यता देना और मान सम्मान करना सीख ना लें।

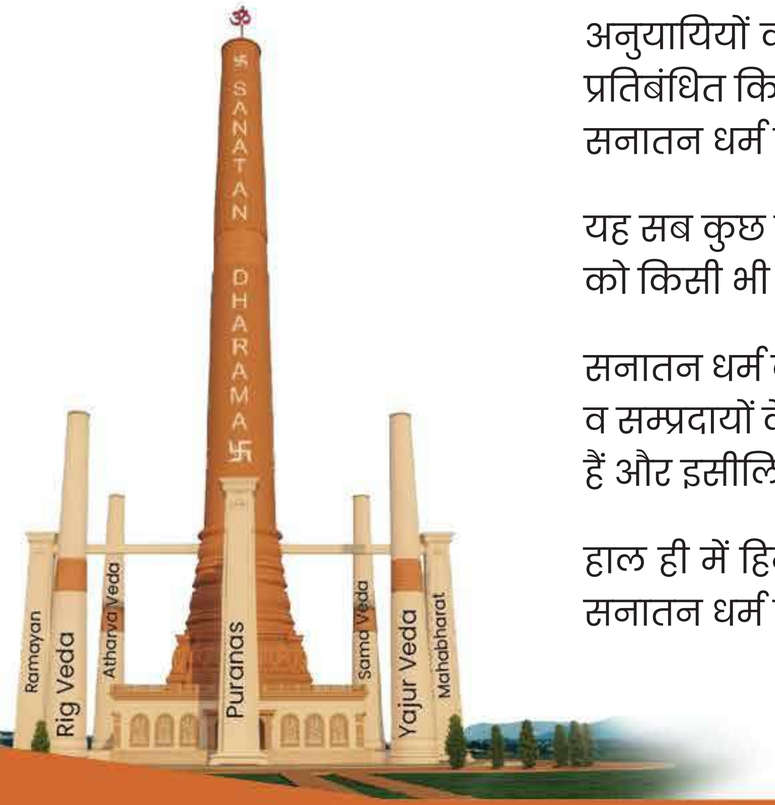

Back